Adda247 GET IT ON Google Play

Civil Services (Main) Examination, 2024

PHKM-C-MTLI

मैथिली / MAITHILI

(अनिवार्य) / (Compulsory)

*निर्धारित समय : **तीन** घंटे*	*अधिकतम अंक : **300***
*Time Allowed : **Three** Hours*	*Maximum Marks : **300***

प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू :

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि ।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि ।

*उत्तर **मैथिली** (देवनागरी लिपि) मे लिखू, जाधरि कि प्रश्नमे कोनो दोसर निर्देश नहि हो ।*

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि ।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Adda247

Test Prime

ALL EXAMS, ONE SUBSCRIPTION

1,00,000+ Mock Tests

Personalised Report Card

Unlimited Re-Attempt

600+ Exam Covered

25,000+ Previous Year Papers

500% Refund

IBPS

NABARD

ATTEMPT FREE MOCK NOW

Adda247 GET IT ON Google Play

Q1. **निम्नलिखितमे सँ कोनो एक शीर्षक पर 600 शब्दमे निबन्ध लिखू :** *100*

(a) लोकतंत्र आ अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता

(b) की भारतमे पेयजल संकट सम्भाव्य अछि ?

(c) जनजातीय संस्कृतिक संरक्षण : प्रयास आ सम्भावना

(d) अधजल गगरी छलकत जाय

Q2. **निम्नलिखित गद्यांशकैं ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर आधार पर नीचाँ देल गेल प्रश्नक उत्तर स्पष्ट, सही आ संक्षिप्त भाषामे लिखू :** *12×5=60*

आलोचना साहित्यक एक अंग मानल जाइत अछि, तेँ ओ साहित्य कैं अपन सीमाक भीतर रखबाक व्यवस्था करैत अछि। साहित्यमे जखन कोनो एहन वस्तु सम्मलित भड जाइत अछि, तखन ओकर रस प्रवाहमे बाधक होइत अछि। तखने साहित्यमे दोषक प्रवेश भड जाइत अछि। ओहिना जेना संगीतमे कोनो बेसुर ध्वनि ओकरा दुषित कड दैत छै।

सत्य भावक प्रकाश आनन्दित करैत अछि। असत्य भावमे तँ दुखक अनुभव होइत अछि। भड सकैत अछि जे कोनो व्यक्ति कैं असत्य भावमे सेहो आनन्दक अनुभव होइत होनि। हिंसा कड कड वा केकरहु धनक अपहरण कड कड वा अपन स्वार्थक लेल केकरहु अहित कड कड किछु व्यक्ति कैं आनन्द प्राप्त होइत छैक। मुदा, ई मनक स्वाभाविक वृत्ति नहि अछि। चोर कैं प्रकाश सँ अन्हार बेसी प्रिय छै। एहि सँ प्रकाशक श्रेष्ठतामे कोनो बाधा नहि पड़ैछ।

जाहि भाव द्वारा हम अपनाकैं दोसरमे मिला सकैत छी, वैह सत्यभाव अछि। प्रेम हमरा अन्य वस्तुसँ मिलबैत अछि, अहंकार पृथक करैत अछि। जाहिमे अहंकारक मात्रा बेसी रहैत अछि ओ दोसरसँ कोना भेट करौक ? तेँ प्रेम सत्यभाव अछि, अहंकार असत्यभाव अछि।

Adda247 GET IT ON Google Play

भक्ति करबाक लेल कोनो प्रत्यक्ष वस्तुक आवश्यकता होइत अछि। दया करबाक लेल कोनो पात्रक आवश्यकता होइछ। धैर्य आ साहसक लेल सेहो मदतिक जरूरत होइछ। तात्पर्य ई अछि जे हमर भावकेँ जगेबाक लेल कोनो बाहरी वस्तुसँ सामांजस्य होयबाक चाही। जँ बाह्य प्रकृतिक हमरा उपर कोनो असरि नहि पड़य, तँ हम केकरहु पुत्रशोकमे विलाप करैत देखि नोरक चारि बूंद नहि खसा सकैत छी। जँ हम कोनो आनन्दोत्सवमे सहभागी बनि आनन्दित नहि भड सकैत छी, तँ ई बूझक चाही जे हम निर्वाण प्राप्त कड लेने छी। ओहि दिशाक लेल साहित्यक कोनो मूल्य नहि। साहित्यकार तँ वैह सुच्चा भड सकैत अछि जे दुनियाँक सुख-दुख सँ सुखी आ दुखी भड सकय आ दोसरमे सुख आ दुख उत्पन्न कड सकय। स्वयं दुख अनुभव कड लेब प्रर्याप्त नहि अछि। कलाकारमे ओकर प्रकट करबाक सामर्थ्य होयबाक चाही। मुदा परिस्थिति मनुष्यकेँ भिन्न दिशामे लड जाइत अछि। मनुष्यमात्रमे भावक समानता होइतो, परिस्थितिमे भेदक कारणेँ प्रतिक्रियामे भेद पर असरि होइत अछि। जँ हम कृषकक संग रहैत छी, वा हमरा हुनका संग रहबाक अवसर भेटैत अछि, तँ स्वभावत: हम हुनक सुख-दुख केँ अपन सुख-दुख बूझड लगैत छी, आ हुनका सँ ओही मात्रामे प्रभावित होइत छी, जतेक हमर भावमे उतरैत छथि। एहि तरहेँ अन्य परिस्थिति केँ सेहो बुझबाक चाही। जँ एकर अर्थ ई लगाओल जाय कि अमुक प्राणी कृषकक वा श्रमिकक वा कोनो आन्दोलनक प्रचार करैत अछि, तँ ई अन्याय अछि। साहित्य आ प्रचारमे की अन्तर अछि ? प्रचारमे जँ आत्मविज्ञापन नहियों हो तँ एक विशेष उद्देश्य केँ पूरा करबाक ओ उत्सुकता होइत अछि, जे साधनक परवाह नहि करैत अछि। साहित्य शीतल, मन्द समीर अछि, जे सभकेँ शीतल आ आनन्दित करैत अछि। प्रचार बिहाड़ि अछि, जे हरियर गाछ केँ उखाड़ि फेकैत अछि आ झोपड़ी वा महल दुनू केँ हिला दैत अछि। ओ रस-विहीन होयबाक कारणेँ आनन्दक वस्तु नहि अछि, मुदा जँ कियो चतुर कलाकार ओहिमे सौन्दर्य आ रस भरि दैक, तँ ओ प्रचारक वस्तु नहि भड कड सत्साहित्यक वस्तु भड जाइत अछि।

(a) आलोचना साहित्यक अंग किएक अछि ? *12*

(b) सत्य आ असत्य भावसँ की आशय अछि ? *12*

(c) मनक स्वाभाविक वृत्ति की नहि अछि ? *12*

(d) लेखकक दृष्टिमे साहित्यकार के भड सकैत अछि ? *12*

(e) साहित्य आ प्रचारमे की अन्तर अछि ? *12*

Adda247 GET IT ON Google Play

Q3. **निम्नलिखित अनुच्छेदक सारांश लगभग एक-तिहाइ शब्दमे लिखू । एकर शीर्षक लिखबाक आवश्यकता नहि अछि। सारांश अपनहि शब्दमे लिखू।** *60*

ई बात ध्यान देबाक अछि जे इर्ष्या व्यक्ति-विशेष सँ होइत अछि। ई नहि होइत अछि जे केकरहु ऐश्वर्य, गुण वा मान सँ सम्पन्न देखलहुँ, तँ ओकरहि सँ इर्ष्या भड गेल। इर्ष्या ओकरहि सँ होइत अछि जकर विषयमे ई धारणा होइत अछि जे लोकक दृष्टि हमरा संग-संग ओहू पर अवश्य पड़त वा पड़ैत होयत। अपना सँ दूर होयबाक कारणेँ अपना संग-संग जाहि पर लोकक ध्यान जयबाक निश्चय नहि होइत अछि ओकरे प्रति इर्ष्या उत्पन्न नहि होइत अछि। काशीमे रहड वला कोनो धनीक केँ यूरोपक कोनो धनीकक बात सुनि कड इर्ष्या नहि हेतैक। हिन्दीक कोनो कवि केँ अंगरेजीक कोनो कविक महत्त्व सुनि कड इर्ष्या नहि हेतैक। सम्बन्धी, बालसखा, सहपाठी आ पड़ोसीक बीच इर्ष्याक विकास बेसी देखल जाइत अछि। बालपन सँ जे आदमी एक संग उठैत-बैसैत देखल गेल अछि, ओहीमे सँ कियो एक-दोसरक उत्थान सँ जरैत देखल जाइत अछि। जँ दू संगीमे सँ कोनो एक नीक पद पर पहुँचि जाइत अछि तँ ओ एहि उद्योगमे रहैत अछि जे दोसर कोनो बढ़ियाँ पद पर नहि पहुँचि जाय। प्राय: अपन उन्नतिक गुप्त बाधाकेँ पता लगबैत-लगबैत लोक अपन कोनो पैघ पुरान मित्र धरि पहुँचि जाइत अछि। जाहि समय संसर्ग-सूत्रमे बंधिकड हम-दोसर केँ अपना संग एक पाँतीमे ठाढ़ करैत छी, ओहि समय सहानुभूति, सहायता आदिक सम्भावना प्रतिष्ठित होयबाक संग-संग इर्ष्या आ द्वेषक सम्भावनाक न्यों पड़ि जाइत अछि। अपने कोनो युक्ति सँ अपन उपकार आ उपकारक सम्भावनाक सूत्रपात करी आ एहि प्रकारेँ भविष्यकेँ अनिश्चयक बाधामे झोंकी ई कखनो भए नहि सकैछ। भविष्यक अनिश्चयात्मकता अटल आ अजेय अछि। अपन लाख विद्या-बुद्धि सँ सेहो हम ओकरा एकदम सँ हटा नहि सकैत छी।

आब ध्यान देबाक बात ई अछि जे इर्ष्याक संसारक लेल इर्ष्या करड वला आ इर्ष्याक पात्रक अतिरिक्त स्थिति पर ध्यान दियड वला समाजक सेहो आवश्यकता छैक। एहि समाजक धारणा पर प्रभाव देबाक लेल इर्ष्या कयल जाइत अछि। ऐश्वर्य, गुण वा मानक गुप्त रूपसँ बिना कोनो समुदाय केँ ज्ञात कराउ, सुख आ सन्तोष भोगबाक लेल नहि। ऐश्वर्य वा गुणमे हम भनहि कोनो व्यक्ति सँ वस्तुत: बढ़ि कड वा

Adda247 GET IT ON Google Play

ओकर तुल्य नहियो होइ तइयो जँ समाजक ई धारणा अछि कि हम ओहिसँ बढ़ि कड वा ओकर तुल्य छी तँ हम संतुष्ट रहब। इर्ष्याक घोर कष्ट नहि उठबड पड़त। केहन अनसोंहात बात अछि जे वस्तु प्रेरित सँ वंचित रहियो कड हम समाजक धारणा मात्रसँ संतुष्ट रहैत छी। इर्ष्या सामाजिक जीवनक कृत्रिमतासँ उत्पन्न एक विष अछि। एकर प्रभाव सँ हम दोसरक उन्नति सँ अपन कोनो वास्तविक हानि नहियों देखिकड व्यर्थमे दुखी होइत छी।

न्यायाधीश न्याय करैत अछि, कारीगर पजेबा जोड़ैत अछि। समाज-कल्याणक विचार सँ न्यायाधीशक साधारण व्यवहारमे कारीगरक प्रति ई प्रकट करायब उचित नहि कि अहाँ हमरा सँ छोट छी? जाहि समूहमे छोट-पैघक अभिमान ठाम-ठाम दृढ़ भड जाइत छैक, ओकर भिन्न-भिन्न वर्गक बीच स्थायी इर्ष्या स्थापित भड जाइत अछि; आ संघ शक्तिक विकास बहुत कम अवसर पर दृष्टिगत होइछ। जँ समाजमे काजकड भिन्न-भिन्न प्राणी जीवन निर्वाह करैत अछि, परस्पर छोट-पैघक ढ़ोलहो नहि पीटल जाय, अपितु ओकर विभिन्नता कैं स्वीकारल जाय, एहिसँ बहुत रास असंतोष समाप्त भड जायत। जतड धरि छोट-पैघक भाव अछि, बहुत प्रचारित भड जाइत अछि आ जीवन-व्यवहारमे निर्दिष्ट आ स्पष्ट रूपमे देखल जाइत अछि। ओतड लोकक शक्ति मात्र किछु विशेष-विशेष स्थानक दिस प्रवृत्त भड ओहि-ओहि स्थान पर एकत्रित हुअ लगैत अछि आ समाजक कार्यक्षेत्रमे विषमता आबि जाइत अछि।

(519 शब्द)

Adda247

Q4. **निम्नलिखित गद्यांशकैं अंगरेजीमे अनुवाद करू :** **20**

कुटीर उद्योग आ लघु उद्योगक चर्चा आइ भारतमे एक बेर पुन: जोर पकड़ि रहल अछि। एहि प्रकारक उद्योग-धंधाक मूलमे एहन घरैया लूरिक छोट-छोट काज-धंधाक परिकल्पना नुकायल अछि, जाहिसँ छोट स्थान पर कम पूंजी आ श्रमसँ स्थापित कड कियो व्यक्ति उत्पादनक भागीदार बनि अपन रोजी रोटीक समस्या हल कड सकैत अछि, बेकारी सँ लड़ि कड सामान्य स्तर पर अपन जीवन जी सकैत अछि। भारत एहन देशक लेल एहि प्रकारक छोट उद्योग-धंधा बेसी हितकर भड सकैत अछि, ई बात महात्मा गाँधी स्वतंत्रता-संग्रामक दिनमे बूझि गेल छलाह। ओ स्वतंत्र भारतमे ओही प्रकारक इकाइ स्थापित करबाक

Adda247
GET IT ON Google Play

परंपरागत उद्योगक नवीनीकरण करबाक प्रेरणा देने छलाह। किंतु, स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद, नेतृत्व एहि दिस ध्यान नहि देलक। पैघ-पैघ उद्योग धंधा एहिठाम विकसित भेल आ ओ सेहो समर्थ लोकक निजी संपत्ति बनि कड रहि गेल। इम्हर बढ़ैत जनसंख्या, शिक्षाक प्रचार, जागृति, अधिकारक माँग आ पहिचान बेरोजगारक निरंतर पैघ होइत पाँति – ई सभ आजुक जागरूक चिंतक कैं विवश कड देने अछि, देरिए सँ सही, देशक एहि प्रकारक बढ़ैत समस्या सँ मुक्तिक लेल गाँधीवादी सूत्रकैं अपनाबी – जे कि एहिठामक आवश्यकता पूरा कड सकैत अछि। परिणामस्वरूप आइ देशमे कुटीर-उद्योग जाल जकाँ पसरड लागल अछि।

Q5. **निम्नलिखित गद्यांशकैं मैथिलीमे अनुवाद करू :** *20*

In our democratic system, the press has a vital role. While there has been large-scale expansion of the print and visual media in recent years, a focused approach to dealing with major societal and political issues has still to evolve. There is, as yet, excessive and exaggerated coverage of exposures and scandals and far too little well-informed comment or analysis of the various deep-rooted factors which generate the continuing malaise. The media could make an extremely useful contribution by devoting adequate coverage to tasks well done, highlighting the achievements of honest and efficient public servants and organizations, according special attention to developments in the remote and backward areas of our country. Our media is free and unfettered. It should be able to expose cases and incidents involving irregular and unlawful exercise of authority and abuses of all kinds. The existing ills in our socio-political environment will, on present reckoning, take considerable time to remedy. The Department of Personnel and Administrative Reforms should focus on establishing institutions responsible for all personnel matters — appointments, postings, transfers etc. — without any external interference. Also, there is a need for adoption of a robust code of ethics to be followed by those involved in public functioning.

Adda247 GET IT ON Google Play

Q6. **(a)** **निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू :** *2×5=10*

(i) भानु *2*

(ii) आलय *2*

(iii) आगि *2*

(iv) जल *2*

(v) राति *2*

(b) **निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू :** *2×5=10*

(i) घृणा *2*

(ii) अग्रज *2*

(iii) शान्ति *2*

(iv) गति *2*

(v) कठोर *2*

(c) **निम्नलिखित अनेकक शब्दक एक शब्द लिखू :** *2×5=10*

(i) माथ सँ पैर धरि *2*

(ii) जकर गरदनि सुन्दर हो *2*

(iii) कम खर्च करड वला *2*

(iv) अपन हित चाहड वला *2*

(v) कोनो बात कें बुझबाक इच्छा *2*

(d) **निम्नलिखित शब्दकें वाक्य मे प्रयोग करू, जाहि सँ अर्थ स्पष्ट भड जाय :** *2×5=10*

(i) पजेबा *2*

(ii) चिक्कस *2*

(iii) ककबा *2*

(iv) झिटुका *2*

(v) बाकुट *2*

Adda247

Adda247
GET IT ON Google Play